धर्म जीवन

देवात्मा अंक

दिसम्बर 2005

परम पू॰ भगवान देवात्मा के
अपने शुभ जन्म महोत्सवों पर
मूल्यवान उपदेश

परम पू० भगवान देवात्मा के मुल्यवान उपदेश

(महोत्सव मुबारक)

परम पू० भगवान देवात्मा का आर्विभाव एक अनोखा आर्विभाव है। उनके भीतर की देव शक्तियां वचित्र शक्तियां हैं। उन देव शक्तियों से परिचालित होकर उन्होंने समय 2 पर जो उपदेश दिए, वह भी अपनी किस्म के निराले उपदेश थें। उन देव प्रभाव-दायक उपदेशों के नोट उच्च कर्मचारी लेते रहे और वह हिन्दी वा उर्दू में छपते रहे। इस अंक में हम उनके कुछ उपदेशों के वह अंश दे रहे हैं जो उन्होंने अपने शुभ जन्म दिन के समय दिए थे।

इन उपदेशों में पू० भगवान की अधिकारी आत्माओं की भलाई के लिए तड़प का परिचय मिलता है, कि किस प्रकार अपनी जर-जर होती स्वस्थ्य, अपनी बूढ़ी अवस्था में भी कई-2 घण्टे अपनी सेहत की परवाह न करके उपदेश देते थे। ऐसी अवस्था में साधारण जन बिस्तर छोड़ने की हालत में नहीं रहता। परन्तु उनका शुभ अनुराग उनके भीतर गज़ब का जोश भर देता था और वह ऐसे तेजस्वी उपदेश देते थे कि अधिकारी जनों को झंझोड़ कर रख देते थे।

32 वर्ष की भरी जवानी में मानवता की भलाई के लिए जो अनोखा जीवन ब्रत ग्रहण किया था, उसमें उन्हें जिन-जिन त्यागों और तड़प में से गुजरना पड़ा उसका भी परिचय हमें उनके इन उपदेशों से मिलता है।

मानवता के महा दुर्भाग्य हैं कि उनके सुखों के आकर्षण उन्हें ऐसे बहुमुल्य उपदेशों से भी लाभ उठाने नहीं देते। न केवल उनसे मानवता ने लाभ नहीं उठाया, बल्कि उनको शत्रु के रूप में देखा, विरोधता के तुफान खड़े कर दिए। उन पर तरह तरह के झूठ इल्ज़ाम लगाए। पू० भगवान को जानकन्दनी में से गुज़रना पड़ा, परन्तु फिर भी मानवता की भलाई ही उनका परम् लक्ष्य रहा।

काश! महोत्सव के समय पर दिए गए उनके यह उपदेश हमारे हृदयों को कुछ सरस कर सकें और हम महोत्सव पर आकर अधि.क से अधिक लाभ उठाने के योग्य हो सकें।

देवात्मा होने के कारण मेरे लिए यह **आवश्यक** था, कि मुझे जिस-2 सम्बन्ध में जो-जो क्रिया **हितकर** बोध हो, उसका अपने **हित अनुराग** के अनुसार **पूर्ण रुप** से साथ दूं, और उसमें सहायक बनूं और अपनी बढ़ती हुई देव ज्योति के द्वारा आत्मा के सम्बन्ध में जब जब और जो-जो सत्य देखूं और जानूं, उसका अपने प्रत्येक आचरण के द्वारा समर्थन करुं और उनके उल्ट कुछ न करुं। देवात्मा होने के कारण, मेरे लिए इस प्रकार के संसार से पूर्णता निराले पथ पर चलना अनिवार्य था।''

– देवात्मा –

धर्म जीवन

खण्ड 17 अंक 10
नवम्बर 2005
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

1918 के महोत्सव पर भगवान देवात्मा का उपदेश

18 दिसम्बर को स्वयं पूर्णांग सच्चे धर्म अवतार श्री देवगुरू भगवान ने तशरीफ लाकर और अपने नाना प्रदेशों के सैंकड़ों सेवकों और श्रद्धालुओं आदि को दर्शन देकर अपने बूढ़े, कमज़ोर और रोगी शरीर के बावजूद प्राय: सवा तीन घण्टे तक लगातार खड़े रहकर अपना अति तेजस्वी और देव प्रभावशाली वार्षिक एड्रैस दिया। भगवान का यह व्याख्यान अपनी मिसाल आप ही था और इसके द्वारा भगवान ने अधिकारी दिलों तक अपनी अद्वितीय देव ज्योति और अपना देव तेज पहुंचाकर उनमें जिस प्रकार की हलचल और आश्चर्यजनक तबदीली पैदा कर दी, उसका ब्यान नहीं हो सकता।

सर्वप्रथम पू० भगवान ने नेचर के विकास क्रम के बारे में फरमाया कि किस प्रकार पृथ्वी बनी, उस पर जीव जन्तु पैदा हुए, मनुष्य की उत्पत्ति हई और मनुष्य जगत के लाखों वर्षों के विकास के क्रम में देवात्मा का अद्वितीय आर्विभाव हुआ और **पू० भगवान ने फरमाया :–** कि जिस प्रकार पौधों और पशुओं की गठनकारी जीवनी शक्ति धातुओं की गठनकारी जीवनी शक्ति से अपनी विशेषता रखती है और मनुष्यात्मा अपनी विकासशील मानसिक और भाषा शक्ति के कारण पशुओं और उनके नीचे के सब जगतों से विशेषता और बढ़ियापन रखता है, उसी तरह देवात्मा अपनी विशेष और पूर्णतय: निराली देव शक्तियों के कारण इस विश्व के सब मनुष्यों से अपनी विशेषता और श्रेयता रखते हैं। यह देवात्मा अपनी जिन देव शक्तियों अर्थात् :–

1. सत्य विषयक पूर्णांग अनुराग।
2. असत्य विषयक पूर्णांग वैराग।
3. हित विषयक पूर्णांग अनुराग।
4. अहित विषयक पूर्णांग वैराग।

शक्तियों को बीज रूप में लेकर प्रकट हुआ था, उनके विकसित होने पर उसके भीतर से जिस आश्चर्यजनक देव ज्योति और देव तेज का प्रकाश हुआ है, इस देव ज्योति और देव तेज का भी और कहीं प्रकाश नहीं हुआ और इन्हीं दोनों चीज़ों की किरणों या लहरों को देव प्रभाव कहते हैं। देवात्मा की यह अद्वितीय देव ज्योति अपनी यह विशेषता रखती है कि वह जब किसी अधिकारी अर्थात् योग्य आत्मा में घुसने का अवसर पाती हैं, तब उसका वह अन्धेरा दूर होता है कि जिसका नाम आत्मिक अन्धकार है और जो किसी प्रकार की किसी और रोशनी से दूर नहीं हो सकता, और इसीलिए इससे पहले मनुष्य जगत के किसी आत्मा के भीतर से दूर नहीं हुआ और देवात्मा से पहले किसी मनुष्य पर

उसके आत्मा की सत्यता नहीं खुली। इस देव ज्योति की धीरे-धीरे उन्नति से देवात्मा ने आत्मा के रूप और उसके रोगों और उसके पतन और उसके नाश और उसकी कुशल के सम्बन्ध में नेचर की सत्य घटनाओं और नियमों के आधार पर जो-जो महागूढ़ तत्व या सत्य देखें हैं और उन्हें देखकर उसने विज्ञानमूलक धर्म की शिक्षा दी है, वह इससे पहले मनुष्य जगत का कोई जन नहीं देख सका और न उनकी किसी धर्म या सम्प्रदाय के हादी या पैग़म्बर या अवतार या गुरु या ऋषि और मुनि या बुद्ध या तीर्थकंर या ख़ुदा या ईश्वर या देवी या देवते ने शिक्षा दी। इसलिए क्या दुनियां के सब धर्म मत, क्या ईश्वर या ख़ुदा आदि किसी प्रकार के माबूद के यकीन के लिहाज़ से, और क्या इबादत या पूजा, पाप या पुण्य और उसके परिणामों आदि नाना प्रकार की और बातों के लिहाज़ से बिल्कुल झूठी गप्पों या गुमरही पर आधारित हैं।

इस तरह देवात्मा का अद्वितीय देव तेज मनुष्यत्माओं में प्रविष्ट होकर उनके भीतर के नाना प्रकार के रोगों के लिए कि जो उन के पतन और विनाश का कारण है (और जिन्हें उसकी देव ज्योति दिखाती है) जिस प्रकार की घृणा और जिस प्रकार के दु:ख को पैदा करके उन्हें एक या दूसरी ऐसी नीच गति से इसी दुनियां में मोक्ष देता है और उनमें उसकी योग्यता के अनुसार किसी हितकर उच्च भाव को पैदा करता है, उस देव तेज की यह क्रिया भी पूर्णत: निराली है, और इसीलिए देव तेज की इसी क्रिया से सैकड़ों आत्माओं में जिस प्रकार का आश्चर्यजनक परिवर्तन आया है, वह परिवर्तन दुनियां के किसी भाग में और किसी कहलाने वाले ईश्वर, ख़ुदा या पैग़म्बर या ऋषि-मुनि या बुद्ध या तीर्थकर या गुरु आदि के द्वारा नहीं आया। और जैसे पहले नहीं आया, वैसे ही अब भी कहीं और नहीं आ रहा। क्योंकि ऐसा परिवर्तन केवल देवात्मा की विशेष देव शक्तियों के द्वारा ही सम्भव था, और सम्भव है और इसके अतिरिक्त किसी और के द्वारा वह न पहले सम्भव था और न अब सम्भव है। और इस सारे आश्चर्यजनक परिवर्तन को लाकर देवात्मा ने देव समाज जैसी जो सच्चे धर्म पर आधारित सोसाइटी जिन विशेष प्रकार के बड़े-बड़े पापों से मोक्ष प्राप्त जनों की स्थापित की है, वैसी सोसाइटी या समाज भी इस संसार में कहीं नहीं और न देवात्मा के अतिरिक्त किसी और के द्वारा, हां कहलाने वाले ईश्वर या ख़ुदा के द्वारा भी किसी ऐसी सोसाइटी का स्थापित होना ही सम्भव है।

तब नेचर के करोड़ों और अरबों वर्षो के संग्राम से जिस देवात्मा का आर्विभाव हुआ है, उसकी जो विशेषता और महिमा है, और उसके द्वारा मनुष्य जगत की जिस प्रकार की उच्च तबदीली का एक नया ज़माना या युग आरम्भ हुआ है और मनुष्य जगत की इस प्रकार की तबदीली के अतिरिक्त इससे नीचे के जगतों के भले का जो काम जारी हुआ है और जिसका प्रमाण किसी न किसी अंश में उसकी उत्पन्न कर्ता देव समाज में विद्यमान है, उसे आज के इस विशेष दिन में तुम लोग भी अपनी-अपनी योग्यतानुसार देखने की कोशिश करो, और यद्यपि अभी तक उसकी विशेषता और महिमा को भली भान्ति देखने के लिए लोगों में जिस प्रकार की आत्मिक योग्यता की आवश्यकता है, वह अभी उन्हें प्राप्त नहीं, फिर भी मनुष्य जगत के लोग जिस प्रकार धीरे-धीरे अपने झूठे धर्मो के विश्वासों और उनकी भयानक कट्टरता और सब से बढ़कर आत्मिक भयानक अन्धकार से निकलने का अवसर पाऐंगे, उसी कदर वह धीरे-धीरे देवात्मा की विशेषता और महिमा और उसकी शरण लेने की जरुरत को अधिक से अधिक अनुभव करेंगे।

श्री देवगुरु भगवान् ने अपने इस व्याख्यान के अन्त में अपने भीतर के देव जीवन के विकसित करने में उन्हें जिस-जिस प्रकार सच्चा और आवश्यक त्याग करना पड़ता है और जिसका वर्णन उनकी

अपनी लिखी गई पुस्ताकों में मौजूद है, उसमें धन के त्याग के सम्बन्ध में फरमाया :- कि उसके (धन) के मोह से वह बाल्यकाल से ही स्वतन्त्र और ऊपर रहे हैं। उन्होंने अपनी पैतृक या पिता की सम्पत्ति में से स्वयं कोई हिस्सा नहीं लिया और अपना सब का सब हिस्सा अपने छोटे भाई को दे दिया कि जिसका लड़का अर्थात् उनका भतीजा यहां इस उत्सव में ही इस समय विद्यमान है और इसके अतिरिक्त क्या इससे पहले और क्या उसके बाद उन्होंने इस पहलू में जो-जो और त्याग किया है, उसका बहुत कुछ इन पुस्तकों में भी ज़िक्र मौजूद है। इसके अतिरिक्त उनके अपने पास अब तक जो कुछ धन रहा है या कोई सम्पत्ति रही है, उसको उन्होंने सिवाय अपनी और अपने परिवार की आवश्यकताओं के अपनी किसी युवा सन्तान को दे देने या दिए जाने के लिए नहीं समझा, परन्तु अपनी और शक्तियों की तरह उन्हें अपने जीवन व्रत में काम आने के लिए ही समझा है। इसी भाव के परिणाम में उन्हेांने अपने वसीयतनामें को हाथ में देखकर उसमें से उसके उस भाग को पढ़कर सुनाया-कि जिसमें उनकी सम्पत्ति के दान कर जाने का वर्णन था और जिसमें उन्होंने सन्तान में से किसी लड़के या लड़की को कुछ नहीं दिया। इस सम्बन्ध में उन्होंने उस ''भेंट फण्ड'' की आवश्यकता ओर उसके सम्बन्ध में अपने आगे के त्याग का वर्णन किया, कि जो उन्होंने स्थापित किया है और जिस फण्ड के एक भाग के द्वारा देव समाज में उन विशेष-विशेष कर्मचारियों की यादगार भी स्थापित होगी कि जो उनके प्रेमक बन कर उनके जीवन व्रत में सारी आयु तक वफ़ादार रह कर सेवाकारी रहे हैं, या रहेंगे।

फिर भगवान् ने जब अपने ऐसे प्रेमक कर्मचारियों का वर्णन करते हुए बताया :- कि किस प्रकार मनुष्य तो एक ओर उन्होंने अपने बचपन में जिस बकरी के दूध से परवरिश पाई थी, उस बकरी के अपने प्रति उस उपकार के लिए भी वे उसे प्रतिदिन अपनी शुभकामनाओं में याद करते हैं, और उसे याद करके वे अपने भीतर के कृतज्ञता के भाव के उछल पड़ने से स्वयं भी फूट पड़े। तब उनके इस वर्णन को सुनते ही बहुत से और उपस्थित जनों के दिल भी फूट पड़े जिस के बाद उन्होंने उपस्थित जनों से यह अपील की कि जैसे उनके जीवन व्रत से बढ़कर कोई और व्रत नहीं है, वैसे ही उसमें सेवाकारी बनने से बढ़कर कोई और सेवा नहीं और कोई पुण्य का काम नहीं, इसलिए जो लोग अपनी जायदाद, अपने धन और अपनी शारीरिक और मानसिक शक्तियों को जिस अंश उनके जीवन व्रत की सेवा में अर्पण करेंगे, उसी कदर वे स्वयं उच्च से उच्चपन प्राप्त करने के अतिरिक्त, सबसे उच्च भलाई के काम में सहायक होंगे। फिर उन्होंने यह भी फरमाया कि जिन लोगों के पास जहां तक रुपया या सम्पत्ति हो, उसमें से अपने निर्वाह या अपने आश्रित जनों आदि की रक्षा के लिए जिस कदर आवश्यकता हो, उसे छोड़ कर, नीच और पतनकारी मोह में फंसकर अपनी किसी ऐसी सन्तान को न देना चाहिए कि जो बालिग़ होकर आप कमा कर अपना गुज़ारा करने के योग्य बन गई है या बन रही हैं, क्योंकि उस पर सन्तान का कुछ हक़ नहीं है परन्तु उनके परम सम्बन्धी देवात्मा के अद्वितीय जीवन व्रत का हक़ है कि जिसके द्वारा उनका या कई अवस्थाओं में स्वयं उनके पारिवारिक जनों का वह भला हुआ हो कि जो उनके किसी और सांसारिक सम्बन्धी के द्वारा नहीं हुआ, और नहीं हो सकता था और जिस देवात्मा की शरण में सदा के लिए रह कर ही किसी का जहां तक उसकी योग्यता के अनुसार उच्च और हर प्रकार और हित सम्भव हो, वह हो सकता है।

(''जीवन तत्व'' 30 दिसम्बर 1918 ई०)

भगवान् देवात्मा के अति मूल्यवान उपदेश

देव समाज के महोत्सव के यात्रीगण और स्थानीय अन्य स्त्री पुरुषों! एक वर्ष क अनन्तर आज महोत्सव के इस विशेष दिन में मैं तुम से फिर मिलने के शुभ अवसर को पाकर अपने हर्ष का प्रकाश करता हूँ। महोत्सव के इस तीर्थ क्षेत्र में तुम सबका आना और एकत्र होना और इसकी नाना शुभकर सभाओं में योग देना और आज के विशेष दिन की सभा में विशेष रुप से शुभ की आकांक्षा करना तुम सब के लिए विशेष रुप से कल्याणकारी हो, और जहां तक सम्भव हो तुम में से प्रत्येक जन का ही विशेष रुप से शुभ और मंगल हो।

आज पौष वदी प्रतिपदा है। आज ही के दिन परन्तु आज से 69 वर्ष पहले पृथ्वी के जिस विशेष देश में देवात्मा का आविर्भाव हुआ, वह विशेष देश तुम्हारा देश है कि जिस के लिए तुम्हारे भीतर बहुत पवित्र अभिमान होना और रहना चाहिए। देवात्मा के आविर्भाव की न केवल इस देश के लिए किन्तु सारी पृथ्वी के लिए नितान्त आवश्यकता थी क्योंकि हज़ारों वर्षों से मनुष्य जगत के प्रकट हो जाने और क्रम-क्रम से इसमें मानसिक शक्तियों के विकास पाने पर भी, उसमें आत्मा के बहुअंग विशिष्ट जीवन्त अस्तित्व और उसके उच्च परिवर्तन और स्थूल देह के साथ उसके सम्बन्ध आदि अत्यन्त आवश्यक और गूढ़ विषयों के सम्बन्ध में पूर्ण अन्धकार छाया हुआ था और इसी कारण ये सब आत्मिक महा गूढ़ तत्व छिपे हुए थे और इसीलिए वह उनके विषय में पूर्ण अज्ञानी था। वह कल्पना शक्ति रखता था और कल्पना-प्रिय था। वह नाना विषयों में आप मिथ्या कल्पनाएं करता था और औरों की मिथ्या कल्पनाओं पर विश्वास करता था। इसलिए मनुष्य जगत में आत्मा तो कहीं रहा, स्थूल पदार्थों और नाना भौतिक घटनाओं के सम्बन्ध में भी सैकड़ों प्रकार की मिथ्या कल्पनाएं की गईं और प्रचलित हुई।

सवाल हो सकता है कि मनुष्य जगत में धर्म व मज़हब के नाम से इस प्रकार के मिथ्या विश्वास क्यों फैले? उसका उत्तर यह है -कि मनुष्य जगत के आत्माओं की गठन अधूरी अर्थात् अपूर्ण व नामुकम्मिल थी और वह गठन जिन देव शक्तियों के द्वारा पूर्ण होती है, वह उनमें से किसी को भी प्राप्त न थी और न उनमें उत्पन्न हो ही सकती थी। इसलिए इन देवशक्तियों के विकास से आत्मा में जिस सर्वोच्च देव ज्योति और देव तेज की उत्पत्ति और उन्नति होती है, वह देव ज्योति उनमें न थी और वह देव तेज भी उनमें न था। हां! उनमें इन सब की उत्पत्ति ही असम्भव थी क्योंकि सर्वांग सत्य विषयक अनुराग और मिथ्या विषयक वैराग और सर्वांग हित विषयक अनुराग और अहित विषयक वैराग भावों की देवशक्तियों की प्राप्ति के बिना मनुष्य में इस देव ज्योति और देव तेज का आविर्भाव हो नहीं सकता था और बिना ऐसी देव ज्योति के कोई मनुष्य अपने आत्मिक अन्धकार से निकलने और आत्मा के सम्बन्ध में उन सत्यों के खोजने, देखने उपलब्ध करने और उनके विषय में सत्य ज्ञान लाभ करने के योग्य ही नहीं हो सकता था कि जिनका पहले वर्णन किया गया है। इसलिए देवात्मा के आविर्भाव और उसमें देवशक्तियों के यथेष्ट विकास से पहले सारा मनुष्य जगत देव ज्योति और देव तेज से शून्य था और आत्मा के सम्बन्ध में भांति-भांति के मिथ्या विश्वासों में ग्रस्त था जैसा कि करोड़ों मनुष्य अब तक भी ग्रस्त हैं।

इस देव ज्योति के बिना जैसे मनुष्य मात्र के लिए अपने आत्मिक रुप और उसके बिगड़ने, नष्ट होने और बनने के सम्बन्ध में सत्य ज्ञान की प्राप्ति असम्भव थी, वैसे ही बिना ऐसे सत्य ज्ञान के उसके लिए सत्य धर्म की प्राप्ति भी असम्भव थी। इसके भिन्न मनुष्य को अपने नाना प्रकार के नीच अनुरागों और अपनी नाना प्रकार की नीच घृणाओं के दासत्व से मोक्ष पाने के निमित्त जिस प्रकार के घृणा और दुःख उत्पादक विशेष प्रभावों को लाभ करने की ज़रुरत थी, उन विशेष प्रभावों का लाभ करना भी देवात्मा के देव

तेज के बिना उसके लिए असम्भव था और इसी देवतेज के द्वारा अधिकारी आत्माओं में जहां एक या दूसरे प्रकार के उच्च भावों व उच्च अनुरागों की उत्पत्ति व उन्नति हो सकती थी, उसका पूर्ण विकास भी असम्भव था। इसलिए जिस देवात्मा ने आज से 69 वर्ष पहले इस पृथ्वी में आविर्भूत होकर और अपने हृदय में सर्वांग सत्य और हित विषयक अनुराग शक्तियों को प्राप्त होकर और उन्हें नेचर के अपने प्रबन्ध के अनुसार धीरे-धीरे विकसित करके इस अद्वितीय देव ज्योति और इस अद्वितीय देव तेज को लाभ किया और ठीक समय के आने पर मनुष्य मात्र के सच्चे शुभ के लिए नेचर के अटल नियमों और सत्यों पर स्थापित विज्ञान मूलक सत्य धर्म के तत्वों का प्रचार किया और आत्मिक जगत के अन्धकार के दूर करने के लिए अपने आप को देव सूर्य के रुप में प्रकाशित किया और अधिकारी मनुष्यों के लिए सत्य धर्म का मार्ग दिखाया, सत्य मोक्ष और उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए अपने देव तेज का सच्चा और परम हितकर भण्डार खोला, उसकी महिमा को आज के विशेष दिन में विशेष रुप में उपलब्ध करो और इस देव सूर्य की इस अद्वितीय देव ज्योति में और उसके इस अद्वितीय देव तेज के द्वारा तुम्हारे अपने-अपने आत्माओं में तुम्हारी अपनी-अपनी योग्यताओं के अनुसार जहां तक और जिस जिस प्रकार का शुभ परिवर्तन आया है, कि जो शुभ परिवर्तन तुम में इसके बिना किसी कहलाने वाले ईश्वर, देवी-देवता, गुरु, पैग़म्बर, हादी, ऋषि, मुनि, बुद्ध, तीर्थंकर और फुंगी आदि के द्वारा नहीं आया और नहीं आ सकता था, इसकी महिमा को भी सन्मुख लाओ और उसकी शरण में आने का जो महा दुर्लभ अधिकार तुम्हें प्राप्त है, इसके सौभाग्य और उसकी जिम्मेदारी को अनुभव करो और आज के इस विशेष दिन को जो न केवल तुम्हारे व तुम्हारी जाति व देश के लिए विशेष उत्सव का दिन है, अपने-अपने लिए विशेष आनन्द और हित की प्राप्ति का साधन बनाओ।

महोत्सव के इस महा तीर्थ पर पहुंचकर तुम में से जिन-जिन में योग्यता हो, उन्हें देवात्मा की ही देव ज्योति में सत्य धर्म के इस तत्व को भी उपलब्ध करने की नितान्त आवश्यकता है कि यद्यपि देवात्मा के देव प्रभावों को किसी मात्रा में पाकर तुम्हारा एक या दूसरे प्रकार के बड़े-बड़े पापों से उद्धार हुआ है और तुम में से कितने ही जनों का ऐसे भयानक पापों से भी उद्धार हुआ है कि जिनके लिए तुम राज्य दण्ड विधि के अनुसार फांसी पर चढ़ाए जा सकते थे और तुम्हारे कई प्रकार के मिथ्या विश्वास चले गए हैं, तुम्हें सत्य धर्म के विषय में अल्पाधिक ज्ञान प्राप्त हुआ है, तुम में से कितनों के घरों से कई प्रकार की हानिकारक रीतियां दूर हो गई हैं, और उनके स्थान में अच्छे और हितकर अनुष्ठान जारी हो गए हैं और तुम में से कितनों के घरों से कई प्रकार के नीच गति मूलक कलह विवाद (लड़ाई-झगड़े) मिट गए हैं और उन के मिट जाने से कई प्रकार के महा भयानक दुःख दर्द नष्ट हो गए हैं, उनके स्थान में तुम्हें शान्ति मिली है, और सुख प्राप्त हुआ है और तुम्हारे पारिवारिक और अन्य विविध सम्बन्ध मीठे बन गए हैं और कितने ही लोगों में तुम्हारी इज्ज़त भी बढ़ गई है और तुम में से कई एक को दयानतदारी और परिश्रम से काम करने के कारण सरकार से खिताब भी मिले हैं और कई प्रकार से तुम्हारा सुख सौभाग्य बढ़ा है और तुम में से कितने ही जन देव समाज की सर्वोच्च सेवा में एक या दूसरे भाव से लग गए हैं और यह सब कुछ अपने तौर पर अवश्य ही बहुत प्रशंसनीय है, तथापि तुम में से अधिकारी जनों के भीतर देवात्मा की देव ज्योति में जब तक यह सत्य प्रगट न हो कि तुम में से किसी जन में जब तक देवात्मा के देवरुप के प्रति देव प्रेम और देव अनुराग उत्पन्न आर उन्नत न हो तब तक वह अपने नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से जहां तक अपनी योग्यता के अनुसार मोक्ष पा सकता था, वहां तक मोक्ष पाना तो कहीं रहा, मोक्ष पाने की इच्छा तक भी नहीं कर सकता और उनके महापतनकारी

दासत्व से निकलने का आकांक्षी तक भी नहीं बन सकता। इसी प्रकार वह अपनी योग्यता के अनुसार अपने आत्मा में उन उच्च अंगों के निर्माण करने के योग्य भी नहीं हो सकता जिनके विकास से उसका आत्मा श्रेष्ठ लोक में पहुंचने और फिर उन्नति करके इससे भी आगे श्रेष्ठ लोकों में जाने और अपने लिए अधिक श्रेष्ठ बनने की सामग्री के पाने का अधिकारी बन सकता है। नीच अनुराग और नीच घृणाओं का दास और अनुगत रह कर कोई जन देवात्मा के देवरुप का अनुरागी हो नहीं सकता क्योंकि ऐसा होना नेचर के नियम के पूर्णतय: विरूद्ध है। जैसे ज़हर का अनुरागी अमृत का अनुरागी नहीं हो सकता, इसी प्रकार अपने आत्मा के उच्च अंगों के विकास को घृणा करने वाला, अपने आत्मा में उच्च अंगों को विकसित कर नहीं सकता। इसलिए जब तक किसी मनुष्य की हृदय भूमि ऐसी न हो कि इसमें से देवात्मा के प्रति देव अनुराग फूट कर उन्नत हो सके, तब तक वह अपने आत्मा को अपने नीच अनुरागों और अपनी नीच घृणाओं के महापतनकारी अंधकार से मुक्त करने और अपने धन, अपनी सम्पत्ति, अपनी बड़ाई, अपने मान, अपनी स्वाद और काम भाव विषयक लालसा, अपने स्वास्थ्य, अपने आराम आदि निम्न शक्तियों और अपने शारीरिक और मानसिक बल और अपने किसी नीच सम्बन्ध आदि को अपने आत्मा के परमावश्यक हित के लिए त्याग नहीं कर सकता, किन्तु उसके विरुद्ध अपने परमआवश्यक आत्मिक हित को उनके लिए त्याग करके अपने आत्मा को दिनों दिन पतित और नष्ट कर देना चाहता है। ऐसा जन अपनी नीच वासनाओं, से परिचालित होकर कई प्रकार के और पशुओं की न्याईं अपने किसी विवाहित व अविवाहित नर-नारी की ओर आकृष्ट हो सकता है, और होता है। धन-सम्पत्ति मान-बड़ाई और प्रशंसा आदि का गाढ़ प्रेमक हो सकता है, और होता है। परन्तु देव-आत्मा से अपनी किसी नीच वासना की तृप्ति न पाने के कारण उनके प्रति कोई आकर्षण अनुभव नहीं करता और न उसकी आकांक्षा करता है, किन्तु कई बातों के विचार से उनके प्रति उल्टा विकर्षण अनुभव करने के लिए मजबूर होता है। कैसी शोचनीय अवस्था! ओह! सत्य अनुरागी, हित-अनुरागी, आत्म अन्धकार और आत्म अज्ञान हर्त्ता, आत्म रोग, आत्मपतन, पतन मूलक दु:खों और आत्म नाश से उद्धार और रक्षा कर्ता, और श्रेष्ठ, सुन्दर, उच्च और रसमय जीवन निर्माणकर्त्ता देवात्मा के प्रति कोई जन अनुराग अनुभव न कर सके और उसका अनुरागी व प्रेमक न बन सके, परन्तु पतनकारी और महा हानिकारक नीच विषयों और नीच सम्बन्धियों का प्रेमक और अनुरागी बन सके, और बने, कैसा अनर्थ! कैसी मूढ़ता! कैसा पागलपन! कैसी उल्टी दशा!!

तब कैसे सौभाग्यवान है वे जन कि जिन्होंने ऐसी जन्मजात हृदय भूमि पाई हो कि जिसमें देवात्मा के परमश्रेष्ठ और अनुपम देवरुप के प्रति अनुराग जागृत हो सकता हो और वह उसके प्रति अपने प्रेम को उन्नत करके अपने नीच अनुरागों और अपनी नीच घृणाओं को क्रमश: त्याग व विनष्ट करने और अपने आत्मा में जहां तक सम्भव हो उच्च अंगों के निर्माण करने की योग्यता रखते हैं।

बहुत बहुत मुबारक

बहुत खुशी की बात है कि गुरु महाराज की पोती श्रीमति लता जी गरेवाल ने हर साल की तरह इस साल भी अपना 500 रु का चैक महोत्सव दान के तौर पर श्री सैक्रेटरी साहिब को भेज दिया है। प्राय: 90 वर्षीय माननीय लता जी पिछले कई सालों से ऐसा करके पाक खुशी हासिल कर रही हैं। हम उनकी ऐसी भावना का गहरे हृदय से समादर करते हुए उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं।

-मंत्री-

1922 ई० के महोत्सव पर देवात्मा के तेजस्वी व्याख्यान का सारांश

एक साल के बाद महोत्सव के इस शुभ अवसर पर अपने सैकड़ों सेवकों और श्रद्धालुओं आदि से फिर मिलने का अवसर पाने पर अपनी दिली खुशी का प्रकाश करने के बाद जीवन दाता भगवान् ने फरमाया कि:-

आज हिन्दी तारीख़ और विक्रमी सम्वत् के अनुसार मेरी आयु के 72 वर्ष पूरे होते हैं। आज से 72 साल पहले जब मैं इन्सानी दुनियां के हज़ारों वर्षों के विकास के क्रम में और कुल मनुष्यात्माओं की गठन से ऊपर अपने नन्हें से आत्मा में इन विशेष शक्तियों को बीज रुप में पाकर इसी देश में आविर्भूत हुआ था कि जिनका नाम **देवशक्तियां** है। तब से लेकर मेरी उम्र के बढ़ने के साथ-साथ ज्यों-ज्यों इन देवशक्तियों का विकास और प्रकाश होता गया, त्यों-त्यों मैं क्या अपने हृार्दिक भावों और क्या अपनी गति के विचार से और मनुष्यत्माओं से अलग होता चला गया। मुझ में अपनी उम्र की तरक्की के साथ पहले पहले आत्महित और परहित विषयक कितने ही अनुराग विकसित हुए। फिर 20 साल की उम्र के बाद सत्य विषयक अनुरागों के विकास का क्रम शुरु हुआ, और 32 साल की उम्र में पहुंचने पर मुझमें मनुष्य जगत के आत्मिक हित का इतना अधिकार हो गया है कि मेरे लिए एक ओर आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में सत्य के ढूंढ़ने, उसके हासिल करने और मनुष्यात्माओं को सत्य असत्य के पथ से निकालने और आत्मा के विषय में जो-जो कुछ बढ़ता हुआ सत्य ज्ञान मुझे प्राप्त होता था, उसके प्रचार करने और दूसरी ओर मनुष्यात्माओं को नाना प्रकार के अहित से निकाल कर उनका विविध प्रकार से हित साधन करने के भिन्न और कोई काम प्यारा न रहा। और इसलिए मैं 20 दिसम्बर 1882 ई० को अपनी ज़िन्दगी के इस ख़ास मकसद के पूरा करने की ग़र्ज से अपने आप को पूर्णतया भेंट धरने के लिए मजबूर हो गया और इसी लाहौर की एक महा सभा में मैंने अपना वह **अद्वितीय जीवन व्रत** ग्रहण किया, कि जिसके ग्रहण और पूरा करने के लिए मैं नेचर की ओर से आर्विभूत हुआ था। परन्तु **मेरा यह जीवन व्रत लगातार जंग का जीवन व्रत था।** इधर मेरे आत्मा में उसके रुप और जीवन के सम्बन्ध में अनुसंधान करने और सत्य के ढूंढ़ने जाने और फैलाने और आत्म हित और परहित साध न के लिए दिनों दिन अनुराग बढ़ने लगा। उधर मनुष्यात्माओं के सम्बन्ध में हित विषयक अनुराग के विकसित होने से उसके विरूद्ध जो-जो कुछ उनमें अहित अर्थात् बुराई या पाप और सत्य विषयक अनुराग के विकसित होने से उसके विरुद्ध जो-जो कुछ असत्य या मिथ्यापन महसूस होता था, उसक लिए मेरे अन्दर दिनों दिन घृणा या नफरत भी बढ़ती गई और इन कुल अनुरागों और घृणाओं की तरक्की का नतीजा यह हुआ कि मनुष्य जग में फैले हुए नाना प्रकार के अशुभ और मिथ्या के नष्ट करने और उनके स्थान में शुभ और सत्य का राज्य लाने के लिए **मेरे लिए जंग और लगातार रुहानी जंग करना एक लाज़मी काम हो गया और इस तौर पर मेरी सारी ही ज़िन्दगी जंग की ज़िन्दगी बन गई। इधर जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद** से मेरे लिए अपने देव अनुरागों की तरक्की के साथ इन्सानों के उन पापों और उनके उन मिथ्या या झूठ पर आधारित विश्वासों और विविध और क्रियाओं पर विशेषत: हमला करना एक आवश्यक काम हो गया, कि जिन्हें वे लोग

प्यार करते थे और जो उन के स्वभाव का निहायत ज़ोरदार हिस्सा बने हुए थे और उधर उनके लिए अपने उन नीच कर्मों और नीच अनुरागों के अनुसार eqsvi uk **विरोधी** पाने पर मुझे अपना **दुश्मन** समझना और मुझे और मेरे ऐसे अनोखे जीवन व्रत को नष्ट कर देने के लिए मेरे मुकाबले में खड़ा हो जाना भी लाज़मी हो गया और ऐसी हालत के आने से मानों दोनों ओर से ही जंग के ऐलान जारी हो गए। एक ओर वे लोग सैकड़ों और हज़ारों की संख्या में थे, दूसरी और **मैं अपने जीवन व्रत का पूर्ण प्रेमक सिर्फ अकेला था।** मैं क्यों अकेला था? क्योंकि मनुष्य जगत के विकास क्रम में देवात्मा को ज़हुर ही बिल्कुल निराला था। देवात्मा जिन अद्वितीय देवशक्तियों को लेकर इस दुनिया में ज़ाहिर हुआ, उनके विकास के साथ-साथ उसकी फितरत इर्द-गिर्द के लोगों से धीरे-धीरे बिल्कुल अलग होती चली गई और उम्र के बढ़ने के साथ-साथ उसका आत्मा देवरुप में विकसित होते जाने के कारण कुल मनुष्यात्माओं से ऊपर और अलग हो गया। यह किसी ने ठीक कहा है कि ''प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिलते न मिलाय''। छोटे बच्चे छोटे बच्चों के साथ ही खेलना पसन्द करते हैं। किसी स्कूल में भी एक कक्षा में पढ़ने वाले सब बच्चों में आपसी आकर्षण नहीं होता बल्कि जिनकी प्रकृति मिलती है उन्हीं में आकर्षण पाया जाता है। पशुओं में भी यही नियम देखा जाता है। इसीलिए कहा गया है कि

''कुनद हम जिन्स बाहम जिन्स परवाज़,
कबूतर बा कबूतर, बाज़ बा बाज़''

कबूतर कबूतरों के साथ और कौए कौओं के साथ मिलकर रहते हैं। फिर पशु जगत के सब उड़ने वाले पक्षियों में भी मेल नहीं है। इसीलिए अंग्रेजी में यह कहावत मशहूर है :-

"Birds of the same feather fly together"

अर्थात एक ही प्रकार के पक्षी आपस में मिलकर उड़ते हैं।

अब चूंकि मेरे आत्मा के भीतर देव शक्तियों के विकसित हो जाने से ज़माने के साथ-साथ हर किस्म के हित के लिए प्रबल अनुराग और हर किस्म के अहित के लिए प्रबल वैराग या घृणा के और हर किस्म के सत्य के लिए प्रबल अनुराग और हर किस्म के मिथ्या के लिए प्रबल घृणा या सख़्त नफरत के **देव भाव** विकसित हो गए। इसलिए वह देवात्मा होकर सब मनुष्यात्माओं से अपनी फ़ितरत के अनुसार अलग हो गया और नेचर के नियमानुसार यह ज़रुरी हो गया कि जो लोग जिस हद तक नीच अनुरागों और नीच घृणा भावों के जिस कदर अधिक से अधिक दास हों और ऐसे दासत्व से जिस-जिस प्रकार की मिथ्या और अहित की पैदायश होती है उन्हें प्यार करते हों, उस हद तक वे मुझ सत्य और शुभ अनुरागी और मिथ्या और अहित के लिए घृणा रखने वाले को स्वभावत: पसन्द न करें और मेरे लिए अपने अन्दर बजाय कशिश के नफ़रत महसूस करें और मैं प्राय: अपने आदमियों में रहकर भी और बातों के भिन्न अपने जीवन व्रत सम्बन्धी संग्राम के विचार से अपने आप को सदा अकेला अनुभव करूं और इसलिए मैं हमेशा अपने आप को अकेला अनुभव करता रहा हूं। ऐसी अवस्था में यह एक स्वाभाविक प्रश्न पैदा होता था, कि मैं अकेला इस जंग में क्योंकर **खड़ा रह सकूंगा** और क्योंकर किसी जीत का मुंह देख सकूंगा।? मुझे अपने इस स्वाभाविक प्रश्न का जो उत्तर मिलता था, वह यह था :-

''तू स्वयं अपनी मर्जी से इस दुनिया में ज़ाहिर नहीं हुआ, तुझे मैने ज़ाहिर किया है और एक विशेष काल में और एक **विशेष लक्ष्य** के पूरा करने के लिए आर्विभूत किया है। तू मेरे हाथों में एक औज़ार की न्याई है और जैसे एक बढ़ई अपने औज़ारों के द्वारा लकड़ी की काट छांट करके

उसकी एक मेज़ बना देता है, वैसे ही जो देव शक्तियां तेरे आत्मा में ज़ाहिर हुई हैं, उनके द्वारा मनुष्य जगत के आत्माओं में विशेष और उच्च परिवर्तन लाना मेरा लक्ष्य है। तेरा यह सारा अस्तित्व मुझ में से और मेरे ही एक विशेष लक्ष्य में काम आने के लिए ज़ाहिर हुआ है। मैने तेरे इस अस्तित्व को उचित समय में प्रकट किया है। मेरे ही द्वारा जैसे तुझ में इन विशेष देव शक्तियों का प्रकाश हुआ है, वैसे ही मेरे ही गुप्त प्रबन्ध से तेरे आत्मा में धीरे-धीरे उन मनुष्यात्माओं में पहुंचना आवश्यक है कि जो उनके हासिल करने की थोड़ी या बहुत योग्यता रखते हैं और तेरे ये देव प्रभाव जब उनके आत्माओं में प्रवेश होंगे, तब मेरे अटल नियमानुसार वे ऐसी आश्चर्यजनक उच्च तबदीलियां पैदा कर देंगे कि जो इस काल का सच्चा चमत्कार होगा।

मेरे इस कुल अद्वितीय युद्ध और उसके लिए कुल त्यागों का क्या फल हुआ? यह फल छिपा हुआ नहीं। मेरे आत्मा में देवशक्तियों के लगातार विकास का क्रम जारी रहा और वह दिनों दिन **देव ज्योति** से ज्योर्तिमय और देव तेज से बलवान होता गया और वह अपने **देव प्रभावों** को अधिक से अधिक अपने चारों ओर फैलाने के योग्य और नेचर के हाथों में बेहतर से बेहतर और हितकर से हितकर औज़ार बनता गया। देव ज्योति के बढ़ने के साथ-साथ एक समय में आत्मा और आत्मिक जीवन और वह जिस नेचर का अंश है, उनके बारे में जो सत्य छिपे हुए थे, वे प्रकट होने लगे और फिर उचित समय के आने पर मुझ में विज्ञान मूलक धर्म के तत्वों का प्रकाश हुआ और मेरी यह देव ज्योति अधिकारी आत्माओं में उनकी योग्यता के अनुसार जिस प्रकार घुसने का मौका पा सकी, उसी कदर उन्हें क्या अपने मिथ्या विश्वासों को मिथ्या रुप में और क्या अपने और औरों के लिए पतनकारी अपने कर्मों और चिन्ताओं को पतनकारी रुप मे देखने का अवसर मिला और मेरे बढ़ते हुए देव तेज के अधिकारी हृदयों में प्रविष्ट होने से उन्हें अपने एक या दूसरे प्रकार के मिथ्या विश्वासों और पाप और बुरे कर्मों और बुरी रस्मों से मोक्ष पाने और सत्य धर्म विषयक तत्वों और पर सेवा-उत्पादक भावों की महिमा और आवश्यकता के देखने और एक या दूसरी सीमा तक एक या दूसरे उच्च भाव के लाभ करने का वह महासौभाग्य प्राप्त हुआ कि जो सौभाग्य उन्हें किसी कल्पित या झूठे उपास्य देव या देवी या किसी भी कहलाने वाले माबूद से हासिल न था और इसी प्रकार के सैंकड़ों सौभाग्यवान जन आज इस समय मेरे सामने महासभा में बैठे हुए हैं।

जिन ख़ातिर हितकारी बनकर,
तरक गुरु घर बार किया,
आत्म हित के उन अन्धों ने,
गुरु पर अत्याचार किया,
अति घोर दुखड़े सहकर भी,
देव धर्म प्रचार किया,
जिन्होंने कल्पाया उनका भी,
सतगुरु ने उद्धार किया।
महाबली थे शुभ की ख़ातिर,
सुख सारा तज डारा है
देव धर्म बतलाने वाला
सत्गुरु देव निराला हैं

भगवान् देवात्मा के सम्बन्ध में वार्षिक साधनों के आरम्भिक दिन में उनका महाशक्तिशाली उपदेश,

10 नवम्बर 1927 ई०

यद्यपि इस बात का बहुत अफ़सोस है कि इस आरम्भिक दिन से कई दिन पहले से परम हित स्वरुप भगवान् देवात्मा एक या दूसरे और कारण के सिवाय अपने अद्वितीय जीवन व्रत सम्बन्धी नाना हितकर कार्यों में सीमा से अधिक परिश्रम करने से अधिक बिमार हो गए थे और यह विश्वास करने की गुंजाइश थी कि अब वे आरम्भिक दिन की यह सभा न करा सकेंगे; और उनके पास रहने वालों ने भी उन्हें यही सलाह दी थी, कि इस हालत में अगर सभा कराई गई तो ज़्यादा हानि की शंका है। इसलिए यह सभा मुल्तवी रखी जाए। फिर भी हमारे परम हितकर्ता भगवान् ने इस हालत में भी यही फरमाया कि अभी हम इस सभा को मुलवती करने की आज्ञा नहीं दे सकते, क्योंकि जैसे नेचर में प्रतिकूल घटनाएं पैदा होती हैं, वैसे ही अनुकूल घटनाएं भी, इसलिए ऐसी दशा में अभी कोई पूरा फैसला नहीं किया जा सकता। सम्भव है, सभा के समय से पहले कुछ अनुकूल हालात पैदा हो जाएं। हुआ भी यही। सभा से एक दिन पहले उनकी शारीरिक अवस्था में कुछ बेहतरी का रुख़ शुरु हो गया। यद्यपि बहुत दुर्बल थे फिर भी सभा में तशरीफ ले आए और अपना उपदेश देने के लिए तैयार हो गए। उन्होंने अपने आत्मिक देव बल पर विश्वास करके सभा का काम आरम्भ कर दिया। परम् पूजनीय भगवान ने अपना महाशक्तिशाली उपदेश शुरु करने से पहले अपने परम लक्ष्य प्रकाशक जीवन मन्त्र के जिन दो पदों को गाकर हृदय के गहरे भाव से शुभ कामना की वे ये हैं:-

सत्यस्य प्रेमी अहं, सत्यं मया जयं लभेत्।

शुभस्य च प्रेमी अहं, शुभं मया जयं लभेत्।

अर्थात् मैं सत्य का प्रेमी हूं, सत्य मेरे द्वारा जय लाभ करे!

मैं शुभ का प्रेमी हूँ, शुभ मेरे द्वारा जय लाभ करें!

फिर भगवान ने इस शुभ अवसर पर सभा में उपस्थित जनों से मिलने पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता का प्रकाश किया और उसके बाद पिछले इतवार की सभा में सामाजिक जनों ने जिस-जिस विषय में उनकी देव बाणी के सुनने की आकांक्षा प्रकट की थी, उसके अनुसार जिन्होंने जिन दो विषयों में अपनी पूर्णत: दुर्लभ और परम कल्याणकारी देव ज्योति और अपने देव तेज का महामूल्य दान प्रदान किया, वे दोनों विषय ये थे : 1. ''हमारे भीतर अपनी नीच अवस्था से निकलने का फिक़र पैदा हो और हम परम पूजनीय भगवान् देवात्मा को अपने सच्चे परम हितकर्ता के रुप में देख सकें'' 2. ''इन विशेष दिनों को किस तरह अधिक से अधिक सफल बनाया जा सकता है?''

पहली बात के विषय में हमारे परम हितकर्ता परम पूजनीय भगवान् ने इस प्रकार फरमाया, कि जिन्होंने इस विषय में उपदेश प्राप्त करने की प्रार्थना की है, उनके बारे में हमें यह मान लेना चाहिए कि वे यह समझते हैं कि उनकी हालत अवश्य नीच हालत है, लेकिन उनके भीतर इससे निकलने की फिक्र नहीं है। अब प्रश्न यह है कि यदि उनके अन्दर अपनी नीच या पतित अवस्था के विषय में सच्चा बोध पैदा हो चुका हो तो क्या वे उसकी उपस्थिति में निश्चिन्त रह सकते थे? बिल्कुल नहीं। अपनी किसी नीच या

पतनकारी अवस्था के सम्बन्ध में सुन सुना कर या अपनी कल्पना से कोई सही परिणाम निकाल कर यह मानना या समझना कि हमारी या मेरी अवस्था नीच है, (अर्थात् हमारे आत्मा जिन नीच या पतनकारी अनुरागों और नीच और पतनकारी घृणाओं में फंसे हुए हैं, उनके कारण हमारा आत्मा निश्यच दिनों दिन नीच या पतित ही बन सकता है कि जो परिणाम अवश्य सही है) और बात है और अपनी किसी पतनकारी हालत के सम्बन्ध में उस हालत के नतीजे से डरना और उससे मोक्ष पाने की फिक़र में डूबना और बात है। मान लो कि एक आठ-दस वर्ष के बच्चे को यह बता दिया जाए कि तुम्हें तपेदिक की मोहलक बिमारी है और वह बिमारी सचमुच उसमें मौजूद हो और वह इस बात को सिर्फ अपने सम्बन्धियों से सुनकर किसी और से भी यह कहें, कि मुझे तपेदिक की बिमारी है तो उसका ऐसा कहना तो ठीक हो सकता है, लेकिन जब तक उस लड़के को उस बिमार के भयानक परणिामों का सच्चा रुप दिखाई न दे और उसे यह प्रतीत न हो कि जो कीड़े उसके फेफड़ों को खा रहे हैं वे जानलेवा कीड़े हैं और यदि वे किसी उपाय से नष्ट न हो सकें, तो फिर उनके द्वारा उसके अपने इन फेफड़ों और उनके साथ उसके जीवित शरीर का नष्ट हो जाना या मर जाना भी ज़रुरी है, तब तक वह इस सम्बन्ध में बेफ़िकर रहेगा। वह बेशक अपने शरीर की मृत्यु नहीं चाहता, लेकिन जब तक और अपनी बिमारी के बारे में यह बोध न हो कि वह उसके लिए जानलेवा है और उस बिमारी के चले चलने से उसका शरीर एक दिन मर जाएगा, तब तक उसके दिल में उसके बारे वह डर पैदा नहीं हो सकता, कि जो उसके अन्दर कोई कष्टदायक चिन्ता पैदा कर दे; और इसलिए वह एक घातक बिमारी में ग्रस्त होकर भी उससे अपने दिल में कोई चिन्ता या कष्ट अनुभव नहीं करता और इस बेफ़िक्री की हालत में ही किसी और के सामने यह कहता है, कि मुझे तपेदिक की बिमारी है और यह कह कर भी बखूबी खुश और सन्तुष्ट रहता है। मगर उसके जो माता-पिता उसकी घातक बिमारी की सच्चाई को जानते हैं, वे उसकी तरह निश्चिन्त दिखाई नहीं देते। वे उसकी इस घातक बिमारी से उदास और चिन्तित पाए जाते हैं, और चाहते हैं कि किसी तरह उनका बच्चा इस जानलेवा बिमारी से निकल आए।

इसी तरह करोड़ों इन्सान अपने-अपने आत्मा के विषय में कोई सच्चा ज्ञान या बोध नहीं रखते और वे इसके पतनकारी रोगों और उनके सांघातिक फलों के सम्बन्ध में पूर्णत: अबोधी रह कर खुश रहते हैं, वे दिनों दिन पतित हो रहे हैं। आत्मिक मौत के नज़दीक जा रहे हैं। इस पतन की राह में वे इस दुनिया में भी नाना अवसरों पर नाना प्रकार के कष्टों और मुसीबतों को उठाते हैं, परन्तु फिर भी इस महा पतित अवस्था में भी निश्चिन्त रहते हैं।

अब यदि नेचर के प्रबन्ध में ऐसा सम्भव हो कि वह जिस अज्ञान या अबोधता के गहरे अंधेरे में ग्रस्त हैं, उनके भीतर कोई ऐसी ज्योति प्रविष्ट हो सके कि जिसके प्रवेश पाने से उन्हें सचमुच अपने आत्मिक पतन के महाभयानक परिणामों की सच्ची तस्वीर दिखाई दे सके, तो फिर वे किसी तरह भी बेफ़िकर नहीं रह सकते। प्रत्येक मनुष्य दु:ख और मौत से बचना चाहता है। हां, पशु जगत का भी प्रत्येक जीव मौत और दु:ख से बचना चाहता है। अब अगर उसे कहीं सचमुच दु:ख महसूस हो और मृत्यु की तस्वीर नज़र आए, तो वह फ़िक्रमन्द होने के बिना नहीं रह सकता। एक-एक नन्हा सा बच्चा जो अपनी माता की गोद में मर रहा है, वह स्वयं तो नहीं जानता कि मरना क्या होता है, या शरीर की मृत्यु क्या होती है, लेकिन उसकी माता उसे मरता हुआ देखकर आराम या शान्ति की हालत में नहीं रहती। वह उसे उस हालत में देखकर बहुत उदास दिखाई देती है। उसकी आंखों में बार-बार आंसू भर आते हैं। वह उसे उस मौत की ओर जाता देख कर एक-एक बार फूट पड़ती है; और

रोने लगती है। उसकी ऐसी हालत क्यों होती है? इसलिए कि वह यह देख रही है कि उसका बच्चा मर रहा है और उस बच्चे के साथ वह अपने हार्दिक आकर्षण के कारण यह नहीं चाहती कि वह मर जाए।

इसी तरह से जिन मनुष्यों को अपने आत्मिक पतन और उसकी मृत्यु की कोई चिन्ता नहीं है, वे इसलिए बेफ़िक्री की हालत में रहते हैं कि उनके भीतर आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में पूर्ण अन्ध कार भरा हुआ है। वे अपने-अपने आत्मा और आत्मिक जीवन के सम्बन्ध में पूर्ण अबोधी और पूर्ण अज्ञानी हैं और घोर अन्धकार की हालत में हैं। वे धनवान हो सकते हैं, पहलवान हो सकते, अच्छे डिग्री प्राप्त हो सकते हैं, राजा और महाराजा हो सकते हैं परन्तु वह आत्मा के लिहाज़ से पूर्ण अज्ञानी और पूर्ण अबोधी हैं। इस पर भी वे यदि अपने अहं अनुराग के कारण अपनी सम्पत्ति या अपनी शारीरिक शक्ति या अपनी विद्या के घमण्ड से अकड़ते हों तो उन की हालत और भी अधिक कृपा पात्र है।

अब प्रश्न यह है कि ऐसे कृपा पात्र मनुष्यों को यह अवस्था अपने प्रकृत रुप में किस प्रकार दिखाई दे? याद रखो, कि बाहर कोई रोशनी ऐसी नहीं कि जो उनके भीतर की ऐसी बुरी अवस्था को उन्हें दिखा सके। सूर्य की रोशनी उन्हें अपनी इस भयानक दशा का रुप नहीं दिखा सकती। मिट्टी या सरसों के तेल से जो रोशनी पैदा होती है, वह भी उनके आत्मिक पतन और उनकी आत्मिक मृत्यु की। सही और सच्ची तस्वीर को उनके सामने उपस्थित नहीं कर सकती। बिजली की रोशनी या कोई और ऐसी ही रोशनी भी उनके इस अन्धकार ग्रस्त दिल को प्रकाशमान नहीं कर सकती। यदि ऐसा हो सकता हो तो किसी चोर या किसी रिश्वतख़ोर को उसकी बुरी अवस्था दिखाने और उसे स्वीकार कराने में उस रोशनी से काम लिया जाता और गवर्नमेंट को भी उससे बड़ी आसानी हो जाती, परन्तु ऐसी नहीं है, अर्थात् बाहर की कोई ऐसी रोशनी, यहां तक कि बाहर के सूरज की भी रोशनी किसी मनुष्य के आत्मा के अन्धकार को दूर नहीं कर सकती और उसकी वास्तविकता को उसे नहीं दिखा सकती। तब वह कौन सी रोशनी है जो आत्मा के सच्चे गठन प्राप्त रुप और उसमें उसके नीच-अनुरागों और उसकी नीच घृणाओं के द्वारा जिन-जिन महाभयानक रोगों और पतन की उत्पत्ति होती है, उसके उस पतन और उस पतन के परिणामस्वरुप जो आत्मिक मृत्यु होती है उसके साथ-साथ विविध प्रकार का जो-जो दुःख और कष्ट प्राप्त होता है, उस की सच्ची तस्वीर को दिखाए, और उसे दिखाकर उनके अन्दर उसके लिए सच्चे ख़ौफ या भय को पैदा कर सके, जिसके पैदा होने से वह फिर अपनी ऐसी दुर्गीति की ओर से बेफिक्र नहीं रह सकता; बल्कि गहरे फ़िक्र में पड़ सकता है? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि वह अद्वितीय रोशनी देवात्मा की देव ज्योति है जो कि जो इस प्रकार का चमत्कार पैदा कर सकती है और देवात्मा का देव तेज ही इस अवस्था से निकलने के लिए इस में काफ़ी और उच्च घृणा पैदा कर सकता है। यही उन की देव ज्योति और उनके देव तेज की यह लीला उनकी अद्वितीय देव लीला है, कि जिस का प्रकाश इस दुनिया में उनके आर्विभाव से पहले किसी भी कहलाने वाले देवता या देवी या हादी या गुरु या ऋषि या मुनि, नबी या पीर, सन्त या अवतार आदि के द्वारा नहीं हुआ।

परन्तु जैसे सूर्य का प्रकाश ऐसे किसी कमरे के भीतर नहीं घुस सकता कि जिसकी दीवारों और जिसके किवाड़ों आदि में से उसके घुसने के लिए कोई रास्ता नहीं होता। वैसे ही देवात्मा की यह देव ज्योति भी किसी ऐसे मनुष्य के आत्मा में नहीं घुस सकती, कि जो पतित होते-होते उसके प्राप्त करने के योग्य नहीं रहा। बेशक देवात्मा की देव ज्योति प्रत्येक आत्मा के भीतर प्रवेश नहीं कर सकती, लेकिन जो अधिकारी जन हैं, उनकी अपनी-अपनी योग्यतानुसार उनमें अवसर पाकर अवश्य प्रवेश करती है और उन्हें उनकी

योग्यतानुसार उनकी पतित अवस्था का अवश्य बोध कराती है।

नेचर के विकास क्रम में उचित समय के आने पर एक देवात्मा ही ऐसे आत्मिक सूर्य प्रकट हुए हैं कि जो अधिकारी जनों को अपनी अद्वितीय देव ज्योति और अपने अद्वितीय देव तेज का दान देते हैं और आत्मिक पतन की अवस्था को असल भयानक रुप में दिखाते और उससे उनकी योग्यता के अनुसार उद्धार करते हैं। क्या इस प्रकार के किसी उद्धार का प्रमाण मिल सकता है? निश्चय, एक दो चार नहीं, दर्जनों लोगों के जीवन से ऐसा प्रमाण मिल सकता है। इस सभा में ही ऐसे कितने जन विद्यमान है कि जिन तक देवात्मा की देव ज्योति और उनके देव तेज ने पहुंचकर ऐसा हितकर परिवर्तन उत्पन्न किया है जो परिवर्तन उनमें और कोई नहीं कर सका था, और न कर सकता था। औरों को छोड़ कर इस समय उदाहरण के तौर पर श्रीमान राम लाल जी के जीवन को देखें। वह देवात्मा के देव प्रभावों के पहुंचने से पहले आत्मा के लिहाज़ से पूर्ण अन्धकार ही हालत में थे। वह आर्य समाज के बड़े पक्के सदस्य थे। वह ईश्वर और वेदों के विश्वासी थे। वह सन्ध्या करते थे और इसके साथ ही वह मौज से खूब रिश्वत लेते थे और कोई तकलीफ मालूम नहीं करते थे। केवल यही नहीं बल्कि ऐसा करने में संतोष प्रतीत करते थे। एक बार का ज़िक्र है कि तीन सौ रुपया रिश्वत में प्राप्त करके उन्होंने ईश्वर को धन्यवाद दिया था। अब प्रश्न यह है कि इस अवस्था में किस प्रकार तबदीली आई? देवात्मा के एक सेवक के द्वारा उन तक उनकी खुशखबरी पहुंची, और उन्हें भगवान के देव प्रभाव अर्थात् उनकी देव ज्योति और उनके देव तेज को लाभ करने का महा सौभाग्य मिला और उन्हें वह रिश्वत लेना अपनी आत्मा के लिए महा पतन और विनाशकारी नज़र आया। वह रिश्वत जो पहले उन्हें सुखदायक प्रतीत होती थी, अब कष्ट दायक अनुभव होने लगी। उनके लिए सुखदायक होने के स्थान में दुःखदायक बन गई। उनके अन्दर यह उल्टी गंगा किसने बहा दी? देवात्मा के देव प्रभावों ने। और ऐसा होने पर उन्होंने ने केवल आगे के लिए रिश्वत लेना छोड़ दिया, बल्कि समय के साथ देव प्रभावों का और अधिक अमल होने पर उन्होंने क्षमा प्रार्थना के साथ सैकड़ों रुपया लोगों को वापिस किया। अब ऐसा क्यों हुआ? नेचर में उसके किसी अटल नियम के पूरा होने के बिना कोई घटना पैदा नहीं होती। तब यह सब कुछ किस तरह हुआ? यह सब इसलिए हुआ कि देवात्मा जो आत्मिक जगत के सच्चे सूरज की न्याई प्रगट हुये हैं, उनकी आत्मिक रुप प्रदर्शक देव ज्योति उन तक पहुंची और उसने उनके आत्मिक अन्धकार को उनकी योग्यतानुसार दूर करके उनके इस पाप और इस पाप से उनका जो आत्मिक पतन हुआ था, उसकी तस्वीर दिखा दी; और उनके देव तेज ने उनके आत्मा में उन पापों के लिए आकर्षण की जगह विकर्षण पैदा कर दिया। सुख की जगह दुःख उत्पन्न कर दिया। क्या ऐसी सच्ची और उच्च करामातें इस दुनिया में कभी किसी और ने भी दिखाई हैं? हरगिज़ नहीं। हमारा सारे मनुष्य जगत को यह खुला चैलेंज रहा है, और अब है कि जब तक किसी जन के भीतर किसी भी मिथ्या या किसी भी बुराई के लिए प्यार या अनुराग रहता है, तब तक उसके लिए उस मिथ्या या बुराई पर स्थिर रहना और उसका कर्ता होना नेचर के अटल नियमानुसार आवश्यक बात है। कोई मनुष्य किसी बुराई या मिथ्या को छोड़ने के लिए तब ही तैयार हो सकता है कि जब उसके भीतर उसके लिए प्यार की बजाये घृणा पैदा हो; और उससे उसे जहां सुख या आराम मिलता था, वहां उस सुख या आराम की बजाय उसमें तकलीफ या दुःख उत्पन्न हो। देवात्मा के अतिरिक्त इस दुनियां में किसी देवता या देवी तथा हादी या गुरु या ऋषि मुनि या सिद्ध या बुद्ध या तीर्थंकर या वली या पीर या पैग़म्बर को यह शक्ति प्राप्त न थी और इसलिए वे इस प्रकार के कोई सच्चे करिश्में न दिखा सके; और जिन करिश्मों के दिखाने का उनकी ओर से दावा किया जाता है, वे

नेचर के अटल नियमों के विरुद्ध होने के कारण पूर्णत: झूठे थे, और झूठे हैं। देवात्मा के द्वारा इस दुनिया में अधिकारी लोगों में उनकी योग्यता के अनुसार इस प्रकार की आश्चर्यजनक उच्च तबदीलियां पैदा हुई हैं, और होती हैं कि जिस का प्रमाण देव समाज से सम्बन्ध रखने वाले सैंकड़ों जनों के जीवन में रोज़े रोशन की तरह ज़ाहिर है और किसी में भी शक्ति नहीं है कि वह इस सच्चाई को किसी प्रकार ग़लत साबित कर दे। तब अपने आत्मिक पतन की प्रकृत अवस्था को देखें और उनके देव तेज को पाकर उस अवस्था से अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार उद्धार लाभ करें और इससे भी बढ़कर आत्मिक उच्च बोधों को को प्राप्त होकर अपने आत्माओं का विकास साधन करें।

फिर इससे आगे यह प्रश्न है कि देवात्मा के द्वारा तुम्हारे आत्मा में जो-जो कुछ परिवर्तन आया है, उससे तुम्हारा हित हुआ है या अहित? यदि उससे तुम्हारा हित हुआ है, जैसा कि अवश्य हुआ है, तो फिर क्या देवात्मा ही तुम्हारा सच्चा और परमहित कर्ता नहीं और उनके सिवाय और कोई नहीं? मनुष्य के अस्तित्व में उसका आत्मा ही मूल वस्तु है। उसके इस आत्मा का जो हित है, वही सबसे उच्च और सबसे बड़ा हित है। इसलिए जिस देवात्मा के द्वारा सच्चा आत्मिक बोध होता है, सच्चा आत्मिक ज्ञान मिलता है, सचमुच किसी पाप या पतन से उद्धार होता है, सचमुच कोई उसमें उच्च भाव पैदा होता है, वही देवात्मा उसके या तुम्हारे परमहित कर्ता हैं। बेशक तुम्हारे उपकारी और भी बहुत से हैं मगर तुम्हारा आत्मिक हितकर्ता देवात्मा के सिवाय कोई नहीं, और तुम देवात्मा की ही देव ज्योति में निश्चय ही उन्हें इसी परमहित कर्ता रुप में देख और उपलब्ध कर सकते हो।

अब दूसरी बात यह है कि देवात्मा के सम्बन्ध में इन विशेष दिनों को किस प्रकार के साधनों के द्वारा सफल बनाया जा सकता है? उसके उत्तर में यह कहना काफी है, कि जो लोग अपने आत्मिक पतन की इस हालत में पहुचे हुए हैं, कि उन्हें अपने आत्मा के सम्बन्ध में कोई पाठ या विचार करना पसन्द नहीं, उस विषय में किसी पुस्तक का लेना या ख़रीदना पसन्द नहीं, इस विषय में किसी उच्च संगत में जाना और बैठना पसन्द नहीं, और ''मौज बहार'' और इससे भी बढ़कर देवात्मा को घृणा करने और उसके सम्बन्ध में घृणा फैलाने के काम के सिवाय और कोई काम पसन्द नहीं, उनके लिए देवात्मा के सम्बन्ध में किसी प्रकार के साधनों की सिरे से ही कोई विधि नहीं हो सकती। हा, जो लोग इस पतन की भयानक अवस्था में पहुंच कर देवात्मा के देव प्रभावों को पाने का अधिकार ही खो चुके हैं, वे उनके सम्बन्ध में कोई और किसी प्रकार का हितकर साधन करने के योग्य नहीं रहे। बाकी जो अधिकारी हैं, जो अभी तक इस हालत में है कि उन तक देवात्मा को देव ज्योति और उनके देव तेज की कुछ किरणें पहुंच सकती हैं, उनके लिए ज़रुरत है कि वे इन दिनों में विशेष रुप से देवात्मा की रची हुई अति हितकर पुस्तकों का श्रद्धा पूर्वक पाठ करें। वे देवात्मा के देवरुप की प्रकाशक पुस्तकों का अध्ययन करें। वे आत्मा के विषय में देवात्मा की शिक्षा का पाठ करें और उस पर विचार करें वह देवात्मा की जीवन कथाओं का पाठ करें और उन पर विचार करें। ऐसा करने से उन तक देवात्मा की देव ज्योति पहुंचने पर उन्हें देवात्मा के देव रुप अपनी आत्मा की असल हकीकत के विषय में एक या दूसरे प्रकार के छुपे हुए सत्य नज़र आ सकते हैं।

दूसरा उपाय यह है कि जहां कहीं इन विषयों में सम्मिलित साधन होते हों, और जिनमें देवात्मा की देव ज्योति और देव तेज का कुछ भी कार्य होता हो, वहां, श्रद्धापूर्वक बैठने और उनके देव प्रभावों को कुछ न कुछ पाने से आत्मिक हित हो सकता है। लेकिन यह बात अच्छी तरह से याद रखो कि क्या अपने निज के पाठ और विचार से और क्या सम्मिलित साधन से लाभ उठाने के लिए प्रत्येक जन के लिए श्रद्धावान और ऐसे किसी साधन का आकांक्षी होना अत्यन्त आवश्यक है। घृणा करने वाले और श्रद्धावान जनों के

लिए धर्म जगत के सब दरवाजें बन्द हैं।

श्रद्धावान के क्या अर्थ? यह कि वह देवात्मा के मुकाबले में अपने आप को बढ़िया न समझते हों, बल्कि अपने आप को देवात्मा और उनके देव प्रभावों का सच्चा मोहताज अनुभव करते हों और दीन भावी होकर अपने आत्मिक शुभ के आकांक्षी हों। जो जन नीच घृणा से भरा हुआ है, घमण्ड से अकड़ रहा है, अपने आप को देवात्मा का मोहताज और उन्हें अपने उद्धार कर्ता और अपने आपको देवात्मा का मोहताज और उन्हें अपने उपकार कर्ता और जीवन दाता के रुप में उपलब्ध नहीं कर सकता, उस तक उनकी देव ज्योति और उनके देव तेज की किरणें नहीं पहुंच सकतीं।,

तब अति आवश्यकता है कि तुम सच्चे श्रद्धावान और अपने आत्मिक हित के सच्चे आकांक्षी बनो। अपने आपको देवात्मा का सचमुच मोहताज महसूस करो और दिल की ऐसी हालत को प्राप्त होकर क्या अपने निज के साधन और क्या सम्मिलित साधन पूरे करो। तब निश्चय तुम्हारी अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार देवात्मा के सम्बन्ध में आज से जो वार्षिक साधन आरम्भ होते हैं, वे तुम्हारे लिए फलदायक हो सकते हैं।

अन्त में परम पूजनीय भगवान् ने सच्ची सात्विक श्रद्धा और सच्चे सात्विक सम्मान की महिमा और उसकी अति आवश्यकता को अपने दिल के गहरे भावों से हमारे सम्मुख प्रकट किया और उसके सिलसिले में जहां यह बतलाया कि वे किस प्रकार अपने घर पर आने वाले भद्रजनों को सम्मान देते हैं, वहां बहुत भरे दिल से फरमाया कि किस तरह उन्होंने देवात्मा होकर भी अपने पिता जी के पांव के अंगूठे को धोकर उसका चरणामृत लिया है और उन्होंने अपना जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद भी अपने माता जी के चरणों में गिर कर और साष्टांग प्रणाम करके उनके सम्बन्ध में अपने हृदय के गहरे सम्मान भाव का प्रकाश किया है। इसी क्रम में भगवान ने फरमाया- कि यदि एक जन इसी प्रकार अपनी माता के चरणों में गिर कर उनके सम्बन्ध में सम्मान प्रदर्शन कर रहा हो और उसका घमण्डी और आत्मा के लिहाज़ से अन्धकार ग्रस्त बेटा उसके पास खड़ा तमाशा देखता हो और वह अपनी दादी को कुछ भी सम्मान न देता हो, या न देना चाहता हो, तब वह अपनी इस बुरी क्रिया से केवल अपनी दादी का ही अपमान नहीं करता, परन्तु अपने पिता का भी घोर निरादर करता है, और अपने आप को बहुत नालायक प्रमाणित करता है, और यदि उसके पिता के भीतर और उच्च भावों को छोड़कर केवल आत्म सम्मान का भाव ही विद्यमान हो, और वह अपने बेटे का दास न हो, तो वह उसे किसी प्रकार सहन नहीं कर सकता। लेकिन ऐसे बाप देव समाज में मौजूद हैं कि जिनके बेटे उनके गुरु को सम्मान देना नहीं चाहते, और वे प्रसन्न रहते हैं, वे अपना अपमान सहते हैं। गुरु का अपमान सहते हैं, लेकिन अपने बेटे के गुलाम होने के कारण कोई उचित क्रिया नहीं कर सकते। अफीका से जो हब्शी लोगों को पकड़कर गुलाम बना लेते थे, वह गुलामी तो चली गई है, लेकिन यह गुलामी अभी लाखों घरों में मौजूद है।

भगवान का यह ब्यान विशेषकर अति ज़ोरदार और प्रभावशाली था। इसका बहुत से दिलों पर अजीब जादू का सा असर हुआ, और एक जन तो इससे प्रभावित होकर बेबस फूट पड़े।

इसके अतिरिक्त भगवान ने देव समाज से सम्बन्धित जनों का इस ओर भी विशेषता से ध्यान फेरा कि वे महोत्सव से पहले बिना किसी तकाज़े के अपने-अपने ज़िम्में का बकाया नियत दान या वादा दान या अखबारों और पुस्तकों आदि की कीमत की रक़म अदा कर दें और यह भी फरमाया कि जो जन इन दिनों में देव समाज की एक या दूसरे पहलू में सेवा कर सकते हों, वो उसकी उत्साह के साथ सेवा करें और इस सेवा के द्वारा भी इन दिनों का विशेष तौर से सफल करें।

(''जीवन तत्व'' 15 नवम्बर 1927)

मेरा अद्वितीय परम लक्ष्य और उसकी सिद्धि में मेरी अद्वितीय मुसीबतें और मुश्किलें

10 दिसम्बर 1927 ई० की महोत्सव की विशेष सभा में, परम पू० भगवान देवात्मा ने अपने परम लक्ष्य की सिद्धि के लिए जो 2 कष्ट और मुसीबतें मोल ली हैं और उन्हें अपने सेवकों वा कर्मचारियों की ओर से भी इस धर्म युद्ध में एक-2 समय में न केवल सहायता नहीं मिली, बल्कि बहुत दुखदाई व्यवहार मिला तो पू० भगवान ने गहरे दुख से इस प्रकार फरमाया:-

अब जब उसे यह पता चलता है, कि जिस समाज को उसने अपने इस युद्ध व परम लक्ष्य में सहायक होने के लिए स्थापित किया है, उसके एक व दूसरे विभाग के परिचालन के लिए उसे यह स्वार्थ परायण जनों से भरपूर देश अब तक ऐसे सुयोग्य जन भी न दे सका कि जिन्हें किसी ऐसे शुभ कार्य के सम्बन्ध में जितने अंश कर्त्तव्य बोधी होने की आवश्यकता थी, उतने अंश वे कर्तव्य बोधी होते और इस विभाग की उन्नति के लिए इनमें जितने अंश उच्च प्रेम की आवश्यकता है, वह प्रेम रखते होते, तब उसके भीतर जिस-जिस प्रकार का आघात लगता है, और उसे जैसा कष्ट मिलता है, उसे न कोई जानता है, और न अनुभव करता है। इसलिए उसकी इन कठिनाईयों के दूर करने में उसका कोई साथी भी नहीं बनता। ओह! कैसी शोकप्रद अवस्था!!

फिर देव समाज के ऐसे कर्मचारियों को छोड़कर जब मैं देव समाज के साधारण मैम्बरों की ओर भी देखता हूं, तब यह देखकर कि वे एक या दूसरी सीमा तक शुभ परिवर्तन पाकर और कई प्रकार के मोटे-मोटे दुराचारों से बचकर भी:-

1. अपने-अपने नाना नीच सुखों और नीच सम्बन्धियों से ऊपर अपने-अपने आत्मा की सत्य मोक्ष और उसमें उच्च जीवन की प्राप्ति के विषय में अपनी आत्मिक अयोग्यता के कारण कोई आकांक्षा लाभ नहीं कर सके।

2. देवात्मा के साथ उन्हें जिन उच्च भावों के द्वारा आत्मिक सम्बन्ध स्थापन करने और उनकी सच्ची आत्मिक पूजा के द्वारा उनके देव प्रभावों के लाभ करने की आवश्यकता है, वे उच्च भाव भी वे अपनी-अपनी आत्मिक अयोग्यता के कारण लाभ नहीं कर सके।

3. धर्म के अटल और सत्य नियमों पर स्थापित देव समाज की दुनियां की मिथ्या मतों पर स्थापित सम्प्रदायों की तुलना में जो विशेषता है, उसकी इस विशेषता और महिमा के देखने के भी वे अयोग्य हैं, और उसकी उन्नति के लिए उनमें जिस उच्च आकर्षण या प्रेम और इस आकर्षण या उसका भी उनमें बहुत बड़ा अभाव है।

4. उनमें ऐसे-ऐसे घमण्डी और घृणाकारी आत्माओं की कमी नहीं कि जो देव समाज रुपी शरीर के अंग कहला कर भी अपने महा पतनकारी घृणा भावों के भड़क उठने पर क्या अपनी ही इस समाज और क्या उसके संस्थापक के सम्बन्ध में विविध प्रकार से हानि पहुंचाने के लिए तैयार हो जाते हैं, और जिस देवात्मा और जिस देव समाज से उन्होंने एक या दूसरे प्रकार का शुभ पाया है, उसके बदले में अशुभ करने में अपने घृणा भाव की तृप्ति ढूंढते और करते हैं।

तब ऐसे मनुष्यों की इस अति शोकप्रद अवस्था को सामने लाकर उसके हृदय में जिस-जिस प्रकार की कष्टकर चिन्ताएं उत्पन्न होती हैं और उनके ऐसे कृत्घनता मूलक नीच कर्मों से उसे जिस-जिस प्रकार के आघात लगते हैं, उन्हें उसके अतिरिक्त और कौन अनुभव करता है?

इसलिए देव समाज की इस शोकप्रद अवस्था में शुभ परिवर्तन लाने के लिए मैने अब यह स्थिर किया है कि :-

1. जो जन देव समाज का मैम्बर या श्रद्धालु या सहायक कहला कर क्या अपने धन, क्या अपने तन और क्या अपनी मानसिक शक्तियों के द्वारा कुछ भी सहायक या सेवाकारी न बनता हो, या न बनना चाहता हो और उसके साथ मिट्टी के से खिलौने की तरह अपना सम्बन्ध रख कर पूर्ण स्वार्थी रहना चाहता हो और इस महा पतनकारी स्वार्थ-परता के भाव से भर कर अपना प्रतिज्ञा कृत नियत दान या कोई और दान भी दबा लेना चाहता हो या उसे निश्चित समय के अन्दर-अन्दर न देना चाहता हो, अथवा इससे भी बढ़कर वह देव समाज से कोई पुस्तक मोल लेकर, उसके दाम भी हज़म कर जाना चाहता हो, उसे समाज में न रखा जाए।

2. देव समाज में जो-जो ऐसे घृणाकारी जन हों कि जो देव समाज की धर्म सेना में शामिल होकर भी अपने उस महानीच और पतनकारी भाव के भड़क उठने पर उसी के संस्थापक और उसके अफसरों और उसके सिपाहियों को गोलियां मारने और उन्हें हानि पहुंचाने के लिए तैयार हो जाते हैं, उन्हें भी पता लगने पर समाज से अलग कर दिया जाए।

अब मैंने अपने जिस युद्ध और उसकी आवश्यकता और उस में अपनी अद्वितीय कठिनाईयों और दु:खों कष्टों और मुसीबतों और विध्नों और रुकावटों आदि का थोड़े से शब्दों में वर्णन किया है, उसके यदि किसी छोटे से छोटे अंश की उपलब्धि भी किसी मनुष्य के लिए सम्भव हो, तो वह पता लगा सकता है कि मेरा यह युद्ध इस पृथ्वी में यद्यपि अनोखा है, लेकिन इससे बढ़ कोई और किसी प्रकार का और युद्ध ज़रुरी और हितकर हो भी नहीं सकता।

ऐ लोगो! ऐ देव समाज से सम्बन्ध रखने वाले जनों! क्या तुम मेरे इस अद्वितीय परन्तु अति कल्याणकारी युद्ध में किसी प्रकार से भी सहायक बनना नहीं चाहते? और पूरे स्वार्थी होकर और मात्र तमाशाई बनकर और इस प्रकार से अपनी महा पतित हालत का प्रमाण देकर अपनी इस अवस्था में सुखी, शान्ति से और आनन्दित रहना चाहते हो? अगर तुम शुभ के सम्बन्ध में किसी प्रकार का हार्दिक उत्तर (Response) देने के विचार से पूर्णतय मुर्दा हो ओर इसलिए मुर्दे की तरह रहना और सड़ गल कर नष्ट हो जाना चाहते हो, तो तुम्हें ऐसे आत्मघात करने का ज़रुर अधिकार है, लेकिन ऐसी हालत को रखकर तुम मनुष्य कहलाने के बिलकुल योग्य नहीं।

ख़ैर! जो कुछ हो, नेचर ने मुझे अपने जिस परम लक्ष्य के लिए प्रकट किया है जिस परम लक्ष्य को पूरा करने की ख़ातिर उसने मुझे व्रती किया है और व्रती करके मुझे इस पूर्णतय अनोखे युद्ध के लिए खड़ा किया है, और इस युद्ध के लिए मुझे जो अनोखी देव प्रकृति दी है, उसके स्वभाव के अनुसार जैसे अब तक मैंने इस पृथ्वी में यह पूर्णतया नया और निराला युद्ध किया है, वैसे ही जब तक मेरा यह स्थूल शरीर इस पृथ्वी में और जीवित रहेगा, तब तक इसी युद्ध में प्रवृत रहना और इसी युद्ध के मैदान में अपने स्थूल शरीर का पात करना मेरे लिए लाज़मी है।

(''जीवन तत्व'' 24 जनवरी 1928 ई०)

Regd. Postal No.Pb (0050) 2003
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

महोत्सव का कार्यक्रम

बुद्धवार 14 दिसम्बर 2005

प्रवेश सभा - 5.00 बजे सायं

वीरवार 15 दिसम्बर 2005

1- पहली सभा - 8.30 बजे प्रात:

विषय - परम पूजनीय भगवान देवात्मा का परम आवश्यक जीवनदायक सम्बन्ध

2- पब्लिक लैक्चर - 4.00 बजे सायं

वक्ता - प्रिंसीपल मिसिज़ सुरजीत बराड़

शुक्रवार 16 दिसम्बर 2005 (महोत्सव का विशेष दिन)

सूर्य निकलने के समय जो कि आत्मिक जगत के सूर्य परम पूजनीय भगवान देवात्मा के शुभ जन्म का समय है, बैंड, बाजा, कीर्तन, शुभकामनाएं और जय ध्वनि - 6.30 बजे प्रात:

1- पहली सभा 8.30 बजे प्रात:

विषय - भगवान देवात्मा का परम लक्ष्य, उसकी सिद्धि के लिए उनका तप, उसके सम्बन्ध में हमारी ओर से कुर्बानियों की आवश्यकता । धन और जन की अपील ।

2- दूसरी सभा - 2.00 बजे दोपहर - बच्चों की सभा और संगीत सभा ।

3- पब्लिक लैक्चर - 4.00 बजे सायं

वक्ता - डाक्टर विनोद जी खेड़ा

4- दीप माला - 6.00 बजे सायं

5- आलोचना सम्बन्धी सुझाव (लिखकर दे सकते हैं)

शनिवार 17 दिसम्बर 2005

1- पहली सभा - 8.00 बजे प्रात: सेवक, सेविकाओं का ग्रहण, श्रेणियों में उन्नति तथा पारिवारिक अनुष्ठान

2- भाव प्रकाश

3- देव आरती का गान और जय ध्वनि

नोट :-

1. कृपया सेवक-सेविका अपनी एकाकारियों के साथ शामिल हों ।
2. आवश्यकता पड़ने पर किसी कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है ।
3. यात्रीगण कृपया अपने बिस्तर अवश्य साथ लाएँ।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।